लौहित्य साहित्य सेतु: सहयोगी विद्वानों द्वारा पुनरीक्षित द्विभाषिक ई-पत्रिका
वर्ष: 3, संख्या: 4; जनवरी-जून, 2022

चलता-कुँवरी

मूल (असमीया): लक्ष्मीनाथ बेजबरुवा
अनुवाद: बिभावना डेका

एक राजा की दो रानियाँ थीं। वे दोनों गर्भवती हुईं । एक दिन दोनों रानियों की संतानें हुईं। बड़ी रानी ने एक लड़के और छोटी रानी ने एक चलता को जन्म दिया । छोटी रानी को बड़ा दुख हुआ कि एक चलता को जन्म दिया है और उसने उस चलते को पिछवाड़े में फेंक दिया । पर देखा गया कि रानी के काम करते या सोते समय वह चलता हमेशा लुड़कती हुई उनके पास आ जाती है । रानी के फेंक देने पर भी वह चलता फिर उन्हीं के पास लुड़ककर आ जाती । एक दिन सुनसान दोपहर को वह चलता घूमती हुई पनघट पहुँचकर वहीं थोड़ा रुक जाती है । उसी समय एक राजकुमार भी उसी पनघट की सुनसान जगह पर मछली फँसाने के लिए बंसी बिछा रहा था। राजकुमार ने देखा कि उस चलते से एक सुंदर लड़की बाहर निकली । उसने नदी में नहाकर सुंदरता से चारों ओर चमकाया और बालों को धूप में सुखाया । फिर वह चलते के अंदर घुस गयी और लुड़ककर माँ के घर वापस आयी। राजकुमार उस लड़की की सुंदरता से मोहित होकर पनघट में ही बंसी छोड़कर घर को लौट आया और रूठकर कोप भवन में घुसा रहा। दूसरी ओर उसके माता- पिता उसे ढूँढते हुए अंत में उसे कोप भवन में रूठा हुआ मिला। उन्होंने जब राजकुमार से पूछा कि क्या हुआ है, तो राजकुमार बताता है कि "ऐसा एक राजा है, जिसके घर में एक लुड़कनेवाली चलता है, उस चलता के साथ मुझे शादी करनी है।" राजा और रानी पहले बोले कि यह तो हंसी आने वाली बात है, नामुमकिन है। वे राजकुमार को समझाने लगे । परंतु राजकुमार ने एक न सुनी। राजकुमार की जिद के सामने हार मानकर पिता ने उस राजा से संदेश देते हुए चलता के साथ उनके बेटे की शादी के लिए प्रस्ताव रखा । चलता की माँ रानी ने जब यह बात सुनी, तो वह रो-रोकर कहने लगी कि "मुझे क्यूँ इस तरह लज्जित किया जा रहा है।" पर वे प्रस्ताव को ताल न सकीं। उन्हें सहमति देनी पड़ी और चलता को नहला-धुलाकर राजकुमार के साथ उसकी शादी करा दी । बड़े धूम-धाम से राजकुमार चलता के साथ शादी करके उसे डोली में बिठाकर अपने घर लाता है।

राजकुमर ने चलता को अपने ही कमरे में रखा। माँ रात को राजकुमार के लिए जो भी

भात भेजती है, राजकुमार उसका आधा हिस्सा खाता है और आधा रख कर सो जाता है। लेकिन जैसे ही राजकुमार को नींद आ जाती है, उस चलते से वह लड़की बाहर निकलती है और भात खाकर फिर से चलते के भीतर घुस जाती है। हमेशा राजकुमार नींद से जगकर रखा हुआ भात न देखकर हैरान होता है। राजकुमार इसका कारण समझ नहीं पाता और मन से दुखी होता है । एक दिन एक बूढ़ी भिखारिन राजकुमार के पास चावल मांगने के लिए आती है। राजकुमार को दुखी देख बुढ़िया ने पूछा,- "बेटा तुम तो उदास होकर बैठे हो? तुमने शादी की, पर हमने तो कहीं भी बहू को नहीं देखा ? "बुढ़िया की बात सुनकर राजकुमार ने उसे शुरू से लेकर अंत तक सम्पूर्ण कथा कही। तो बुढ़िया ने कहा "हाँ बेटा, चलता के अंदर ही तुम्हारी राजकुमारी है; तुम अपने कमरे में तूस की आग रखना। फिर दही के साथ भीम केले को गूँधते हुए एक कटोरी में आग के पास रख देना। तुम अपने बिस्तर पर सोने का ढोंग करके खर्राटे मारते रहना। तुम्हें नींद में देखकर जब चलता से राजकुमारी निकलकर खाने के लिए बैठेगी, तब तुम जल्दी उठकर उस चलता को तूस की आग में डालकर जला देना। तब लड़की धड़ाम से जमीन पर गिर पड़ेगी । तब तुम जल्दी उस कटोरी से दही और केले लाकर उसके सिर पर रख देना । ऐसा करते ही उसे होश आयेगा और वह बैठ जायेगी । "बूढ़ी की बुद्धि राजकुमार को बड़ी अच्छी लगी और राजकुमार ने उसे इनाम देकर विदा किया । राजकुमार ने रात को बूढ़ी के बताए हुए तरकीब से चलता-कुँवरी को हासिल किया।

राजकुमार के पिता-माता ने जब दूसरे दिन यह घटना सुनीं और अपने बहू को देखा, उन लोगों की खुशी का ठिकाना न रहा। समधी-समधिन राजा और रानी को उनके द्वारा यह संदेश भेजने से वे भी बहुत खुश हुए और उनलोगों ने फिर से बड़े धूम-धाम से अपनी बेटी चलता कुँवरी की शादी कारायी ।

**(बूढ़ी आइर साधु से संकलित)*

संपर्क-सूत्र:
मूल लेखक: लक्ष्मीनाथ बेजबरुवा
असमीया कथा-साहित्यकार
अनुवादक: बिभावना डेका
छात्रा, डॉन बोस्को विद्यालय
गुवाहाटी